

पृ. १२२
१५४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ काकनाकं । देव आहवा नष्टाक ॥ अन्नका यवा सत्रिष्टु स्वामी । नत्सर्वथा मदीयं नसि मय ययुर्ना ॥ यत ॥ युक्तनि ॥ स्वामिना त्वका समुद्रा यित्त जी वरि । अथिध
नक्त विवेय ॥ किं कयाति गता मुषि ॥ अयन वेश ॥ स्वामि मूला रव द्वा ता ॥ सर्वा ॥ प्रकृत य ॥ रवत् ॥ समल प्रहिदक । ययन्न ॥ सरु सान्ता ॥ सिद्ध नाकं ॥ रद्व व रं प्राण य निखा गान यन ॥ इत
कं म्म लिष्ट क रि ॥ जीव क न पि न्ना ॥ भा की ॥ तगा यि सिद्ध नाक मा स्ता । वायु ड वा वा ॥ मद ह न जी व तु स्वामी ॥ सिद्ध नाकं । न क द वि द व मू चि न् । अथ विष्ट क ॥ अथिना र व प्र य म्म क्ता त्म द ह्म
न माह । तत रु द्ध र्म न् वा सो । दी यी ना क् किं वि मा र्ग । वा या दि न ॥ सर्व रं कि त श्च । अभा र्द वी मि । म ति द्वा ला य न नू न मि त्या दि ॥ अथ रु ती य भू र्ना कं । त द न क र् । रु ती य भू र्ना क व र्ना श्च
त्वा स्व विष्ट म्म नि श्चि य च्छ ॥ रु ती । स्ना त्वा । गृ ह्म य यो ॥ स का ग म्म नी त्वा भू र्ना ॥ र्वा दि त ॥ अभा र्द वी मि ॥ आ त्मो य म्म न या व र्ही त्या दि ॥ ॥ ना माह । म द्य व र्णु । क थं त्व या ग्म क्ता

कथमनेन २

ॐ सुविमलमूर्ति। कथमनेन वामनयः ४ कनः ४ भव्यवर्ण उवाच ॥ दिवस्वमिका यार्थिना स्वयया जनवसादा किं किन्नक्रियतं । यथा ॥ लाकावहमि किं वा न नमूद्रादभ्यभिधनी । काल
यन्त्रपिवकां प्रीतिमीव गानिककति ॥ तथा वाक् ॥ स्वनायिवदुक्तं कार्यमासाद्यवृद्धिमान् । यथा कथं न सत्यं मूढकाविनियानिना ॥ ॥ वाडाहो मय्यदुःखं यति । अस्मिन् ॥
यानेकं समन्वयि स्यान्तामसम्य ४ सातिगी ॥ तमास्वाहा वमयाचक मक्रम ॥ वस्तीनयति त्वास्ति ४ नतादूनामशुकनकनविलय ४ किमिति तामाहव नानि असीति । सम्यक् ॥
रुद्रगकृत्किन्तमममन् राग्यस्य कृत्कृत् प्रप्रेत । स्वायकातकोक ४ सर्वथा कथातामिति न सत्यं माह । स्या कृत् । अथ वक्त्रपूवको लिप्यनाम ४ प्राप्ति यम्यपूजा विष्णोर्वर्षदणी
य ४ सर्वमुपसृष्टं ॥ दुर्देवात्मयान् लक्ष्मि नमः ४ तन ४ सुणाल् लक्ष्मिनामा तर्कपूर्व मरणमवलाक को लिप्य ४ ॥ क मूढि ४ यति ४ यथिवीतल लला ॥ अतन नविवक्त्रपूवनिवायिन ४

५१

५३७

[illegible]

[illegible]

ककुत्रः यविकुः ॥ अथ गदह ॥ नव गाव दय्याया नसुकिमिति तम ॥ सुदं ॥
पाकलेया। त्वमेव जानासि, यथा ह मेतस्य गृह न कीकनामि। तना यविना निर्वेता ममायया गनि जाना कि। नन ॥ नना समा हा न ना यि मना दना यना विना वि न दना।
नस्यामिना इन्द्रो विष्णु, मना दना रुव कि। गदह ॥ नन ॥ याव न कार्ये का ल म ॥ सकि रुत ॥ सकि रुत ॥ ककुत्रा य्या हा। गदह ॥ नना वना रुतान् सीता वयं ॥
सु, कार्ये पव सकि पुरु ॥ यम ॥ अथि गाना रुतो स्वामि, दवा या अंम सवन। दूरा म्या त्या दन च व, न स कि पु नि रु रुका ॥ गदह ॥ सुको य मा हा। अथ या यी या स्वः
य ॥ स्वामि का यो ये का भव क ना सि। रु वतु यथा स्वामी जा ग लि री म या क ल वी ॥ यम ॥ दृढ म ॥ सव य द क, ज० ने ल द्वा गान न। स्वामिनी सर्व रा व ने यं व सा क म मा य या ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमः ॥ १ ॥ सर्वं तावय निवियल्लिखु। माहय निवसम्यको कथमर्थं ॥ २ ॥ सुखावहा ॥ ३ ॥ अमो धं यस्य विल्लुहा वनीतस्य निनीहना। प्रकालं नोदिय कस्य इतदस्य
 ॐ नमः ॥ ४ ॥ यथा छामिषमाका ॥ ५ ॥ यकिहि ॥ ६ ॥ स्वायदेकु वि। रुक्म ॥ ७ ॥ लिलमस्ये सुधसर्वेण विल्लुवान् ॥ ८ ॥ नाङ्ग ॥ ९ ॥ लिलायं ॥ १० ॥ नत ॥ ११ ॥ स्वगंतादयि। सुधम
 थवता निह्ये मर्या ॥ १२ ॥ यातारुतामिव ॥ १३ ॥ जन्म निक्केण वाहुल्य किं नू ॥ १४ ॥ खमन ॥ १५ ॥ पनी ॥ १६ ॥ कांम्ययना नासि यधं चान निवर्तते ॥ १७ ॥ अनंतावदसलसं लखं ककु न
 धात्यते। लखना ॥ १८ ॥ यथा मर्या सुस्मादतीन विनयैत् ॥ १९ ॥ एष्वायदिय त्रिषका काद निडु ॥ २० ॥ कव्ठी ॥ २१ ॥ न ॥ २२ ॥ न ॥ २३ ॥ न ॥ २४ ॥ न ॥ २५ ॥ न ॥ २६ ॥ न ॥ २७ ॥ न ॥ २८ ॥ न ॥ २९ ॥ न ॥ ३० ॥ न ॥ ३१ ॥ न ॥ ३२ ॥ न ॥ ३३ ॥ न ॥ ३४ ॥ न ॥ ३५ ॥ न ॥ ३६ ॥ न ॥ ३७ ॥ न ॥ ३८ ॥ न ॥ ३९ ॥ न ॥ ४० ॥ न ॥ ४१ ॥ न ॥ ४२ ॥ न ॥ ४३ ॥ न ॥ ४४ ॥ न ॥ ४५ ॥ न ॥ ४६ ॥ न ॥ ४७ ॥ न ॥ ४८ ॥ न ॥ ४९ ॥ न ॥ ५० ॥ न ॥ ५१ ॥ न ॥ ५२ ॥ न ॥ ५३ ॥ न ॥ ५४ ॥ न ॥ ५५ ॥ न ॥ ५६ ॥ न ॥ ५७ ॥ न ॥ ५८ ॥ न ॥ ५९ ॥ न ॥ ६० ॥ न ॥ ६१ ॥ न ॥ ६२ ॥ न ॥ ६३ ॥ न ॥ ६४ ॥ न ॥ ६५ ॥ न ॥ ६६ ॥ न ॥ ६७ ॥ न ॥ ६८ ॥ न ॥ ६९ ॥ न ॥ ७० ॥ न ॥ ७१ ॥ न ॥ ७२ ॥ न ॥ ७३ ॥ न ॥ ७४ ॥ न ॥ ७५ ॥ न ॥ ७६ ॥ न ॥ ७७ ॥ न ॥ ७८ ॥ न ॥ ७९ ॥ न ॥ ८० ॥ न ॥ ८१ ॥ न ॥ ८२ ॥ न ॥ ८३ ॥ न ॥ ८४ ॥ न ॥ ८५ ॥ न ॥ ८६ ॥ न ॥ ८७ ॥ न ॥ ८८ ॥ न ॥ ८९ ॥ न ॥ ९० ॥ न ॥ ९१ ॥ न ॥ ९२ ॥ न ॥ ९३ ॥ न ॥ ९४ ॥ न ॥ ९५ ॥ न ॥ ९६ ॥ न ॥ ९७ ॥ न ॥ ९८ ॥ न ॥ ९९ ॥ न ॥ १०० ॥ न ॥ १०१ ॥ न ॥ १०२ ॥ न ॥ १०३ ॥ न ॥ १०४ ॥ न ॥ १०५ ॥ न ॥ १०६ ॥ न ॥ १०७ ॥ न ॥ १०८ ॥ न ॥ १०९ ॥ न ॥ ११० ॥ न ॥ १११ ॥ न ॥ ११२ ॥ न ॥ ११३ ॥ न ॥ ११४ ॥ न ॥ ११५ ॥ न ॥ ११६ ॥ न ॥ ११७ ॥ न ॥ ११८ ॥ न ॥ ११९ ॥ न ॥ १२० ॥ न ॥ १२१ ॥ न ॥ १२२ ॥ न ॥ १२३ ॥ न ॥ १२४ ॥ न ॥ १२५ ॥ न ॥ १२६ ॥ न ॥ १२७ ॥ न ॥ १२८ ॥ न ॥ १२९ ॥ न ॥ १३० ॥ न ॥ १३१ ॥ न ॥ १३२ ॥ न ॥ १३३ ॥ न ॥ १३४ ॥ न ॥ १३५ ॥ न ॥ १३६ ॥ न ॥ १३७ ॥ न ॥ १३८ ॥ न ॥ १३९ ॥ न ॥ १४० ॥ न ॥ १४१ ॥ न ॥ १४२ ॥ न ॥ १४३ ॥ न ॥ १४४ ॥ न ॥ १४५ ॥ न ॥ १४६ ॥ न ॥ १४७ ॥ न ॥ १४८ ॥ न ॥ १४९ ॥ न ॥ १५० ॥ न ॥ १५१ ॥ न ॥ १५२ ॥ न ॥ १५३ ॥ न ॥ १५४ ॥ न ॥ १५५ ॥ न ॥ १५६ ॥ न ॥ १५७ ॥ न ॥ १५८ ॥ न ॥ १५९ ॥ न ॥ १६० ॥ न ॥ १६१ ॥ न ॥ १६२ ॥ न ॥ १६३ ॥ न ॥ १६४ ॥ न ॥ १६५ ॥ न ॥ १६६ ॥ न ॥ १६७ ॥ न ॥ १६८ ॥ न ॥ १६९ ॥ न ॥ १७० ॥ न ॥ १७१ ॥ न ॥ १७२ ॥ न ॥ १७३ ॥ न ॥ १७४ ॥ न ॥ १७५ ॥ न ॥ १७६ ॥ न ॥ १७७ ॥ न ॥ १७८ ॥ न ॥ १७९ ॥ न ॥ १८० ॥ न ॥ १८१ ॥ न ॥ १८२ ॥ न ॥ १८३ ॥ न ॥ १८४ ॥ न ॥ १८५ ॥ न ॥ १८६ ॥ न ॥ १८७ ॥ न ॥ १८८ ॥ न ॥ १८९ ॥ न ॥ १९० ॥ न ॥ १९१ ॥ न ॥ १९२ ॥ न ॥ १९३ ॥ न ॥ १९४ ॥ न ॥ १९५ ॥ न ॥ १९६ ॥ न ॥ १९७ ॥ न ॥ १९८ ॥ न ॥ १९९ ॥ न ॥ २०० ॥ न ॥ २०१ ॥ न ॥ २०२ ॥ न ॥ २०३ ॥ न ॥ २०४ ॥ न ॥ २०५ ॥ न ॥ २०६ ॥ न ॥ २०७ ॥ न ॥ २०८ ॥ न ॥ २०९ ॥ न ॥ २१० ॥ न ॥ २११ ॥ न ॥ २१२ ॥ न ॥ २१३ ॥ न ॥ २१४ ॥ न ॥ २१५ ॥ न ॥ २१६ ॥ न ॥ २१७ ॥ न ॥ २१८ ॥ न ॥ २१९ ॥ न ॥ २२० ॥ न ॥ २२१ ॥ न ॥ २२२ ॥ न ॥ २२३ ॥ न ॥ २२४ ॥ न ॥ २२५ ॥ न ॥ २२६ ॥ न ॥ २२७ ॥ न ॥ २२८ ॥ न ॥ २२९ ॥ न ॥ २३० ॥ न ॥ २३१ ॥ न ॥ २३२ ॥ न ॥ २३३ ॥ न ॥ २३४ ॥ न ॥ २३५ ॥ न ॥ २३६ ॥ न ॥ २३७ ॥ न ॥ २३८ ॥ न ॥ २३९ ॥ न ॥ २४० ॥ न ॥ २४१ ॥ न ॥ २४२ ॥ न ॥ २४३ ॥ न ॥ २४४ ॥ न ॥ २४५ ॥ न ॥ २४६ ॥ न ॥ २४७ ॥ न ॥ २४८ ॥ न ॥ २४९ ॥ न ॥ २५० ॥ न ॥ २५१ ॥ न ॥ २५२ ॥ न ॥ २५३ ॥ न ॥ २५४ ॥ न ॥ २५५ ॥ न ॥ २५६ ॥ न ॥ २५७ ॥ न ॥ २५८ ॥ न ॥ २५९ ॥ न ॥ २६० ॥ न ॥ २६१ ॥ न ॥ २६२ ॥ न ॥ २६३ ॥ न ॥ २६४ ॥ न ॥ २६५ ॥ न ॥ २६६ ॥ न ॥ २६७ ॥ न ॥ २६८ ॥ न ॥ २६९ ॥ न ॥ २७० ॥ न ॥ २७१ ॥ न ॥ २७२ ॥ न ॥ २७३ ॥ न ॥ २७४ ॥ न ॥ २७५ ॥ न ॥ २७६ ॥ न ॥ २७७ ॥ न ॥ २७८ ॥ न ॥ २७९ ॥ न ॥ २८० ॥ न ॥ २८१ ॥ न ॥ २८२ ॥ न ॥ २८३ ॥ न ॥ २८४ ॥ न ॥ २८५ ॥ न ॥ २८६ ॥ न ॥ २८७ ॥ न ॥ २८८ ॥ न ॥ २८९ ॥ न ॥ २९०

विहारी

सर्व

प्रलयः प्रलयः प्रलयः प्रलयः ॥ यत्रित्या गम्यन्ति ॥ अक्षानरवस्य मरुतः सनी ॥ लब्धयतनकावुर्नै ॥ यन्नासिमकनत्तैययलीययुत्तायतासि ॥ यत्र ॥ सनी
 एवसनीनिय, मायकनरगहं तव ॥ गङ्गानां यक्षलग्नानां, गङ्गायवधूनधरा ॥ अथ ॥ स एकोऽविमानवानां स्तुतुमः सत्यवृषवृत्तस्य, यस्यार्थिनावागान
 ॥ गतावा, नाभाविही गमहि मरुत्वा ॥ युयाकि ॥ तदैवैत नृपैः क्वा हानैः कर्वात्त ॥ सृष्टिद्वयः सूरवीव सनि ॥ अथविग्राहनामाम ग ॥ केनायिगसिक्त, सगगायमिलित
 ॥ ततः ॥ यथा दायार्त्तं यहेतु माकलय्य मरुत्वा गङ्गां प्रविष्ट ॥ मूयकथ विवन्मृत ॥ अथ ॥ यकाकावकागं गत ॥ तनालब्धयतनकन सूरनीनित्रय रयहेतु नकाप्यवंलाकि ॥
 यथा रुद्रवनादास, स्यपुनः सधर्मिलित्वा वायविष्ट ॥ मरुत्वा ॥ तदुमग स्वागतं ॥ विदुषा दकाद्या हाना ॥ नृत्तयता ॥ अथावस्माननवधनमिदं सना ॥ किं यमं ॥ विष्ट ॥

लूके शसिताहं। एवतां जनलमागता, रुदं हि ४ सहमिण, लमिहामि। गकुत्वा, हिनन्धको ५ वदत्। मिणह कावदह्माहि ४ सह ५ यत्निस्यत्र मैव एव न ४ ॥ ३ ॥
 मागतां। त्रकिर्तव्यसुनै सध, मिणहै यं वदु विधि ॥ गदगुह्यगुह निवि ॥ ४ ॥ लही यतामिति ॥ गकुत्वा मग ४ सानन्दकम, स्वका हान विहान ४ पांनियं पीला, जला संत तद्रका यामयः
 विह ४ ॥ ५ ॥ यधनन ४ ॥ ६ ॥ सरेव मग, केन हं गुसितास्य, स्मि विडनवनै, कदाचि किंया ४ ॥ ७ ॥ सवनकि। म ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥ ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ ॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥ ॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥ ॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥ ॥ १७१ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥ ॥ १७७ ॥ ॥ १७८ ॥ ॥ १७९ ॥ ॥ १८० ॥ ॥ १८१ ॥ ॥ १८२ ॥ ॥ १८३ ॥ ॥ १८४ ॥ ॥ १८५ ॥ ॥ १८६ ॥ ॥ १८७ ॥ ॥ १८८ ॥ ॥ १८९ ॥ ॥ १९० ॥ ॥ १९१ ॥ ॥ १९२ ॥ ॥ १९३ ॥ ॥ १९४ ॥ ॥ १९५ ॥ ॥ १९६ ॥ ॥ १९७ ॥ ॥ १९८ ॥ ॥ १९९ ॥ ॥ २०० ॥ ॥ २०१ ॥ ॥ २०२ ॥ ॥ २०३ ॥ ॥ २०४ ॥ ॥ २०५ ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ २०७ ॥ ॥ २०८ ॥ ॥ २०९ ॥ ॥ २१० ॥ ॥ २११ ॥ ॥ २१२ ॥ ॥ २१३ ॥ ॥ २१४ ॥ ॥ २१५ ॥ ॥ २१६ ॥ ॥ २१७ ॥ ॥ २१८ ॥ ॥ २१९ ॥ ॥ २२० ॥ ॥ २२१ ॥ ॥ २२२ ॥ ॥ २२३ ॥ ॥ २२४ ॥ ॥ २२५ ॥ ॥ २२६ ॥ ॥ २२७ ॥ ॥ २२८ ॥ ॥ २२९ ॥ ॥ २३० ॥ ॥ २३१ ॥ ॥ २३२ ॥ ॥ २३३ ॥ ॥ २३४ ॥ ॥ २३५ ॥ ॥ २३६ ॥ ॥ २३७ ॥ ॥ २३८ ॥ ॥ २३९ ॥ ॥ २४० ॥ ॥ २४१ ॥ ॥ २४२ ॥ ॥ २४३ ॥ ॥ २४४ ॥ ॥ २४५ ॥ ॥ २४६ ॥ ॥ २४७ ॥ ॥ २४८ ॥ ॥ २४९ ॥ ॥ २५० ॥ ॥ २५१ ॥ ॥ २५२ ॥ ॥ २५३ ॥ ॥ २५४ ॥ ॥ २५५ ॥ ॥ २५६ ॥ ॥ २५७ ॥ ॥ २५८ ॥ ॥ २५९ ॥ ॥ २६० ॥ ॥ २६१ ॥ ॥ २६२ ॥ ॥ २६३ ॥ ॥ २६४ ॥ ॥ २६५ ॥ ॥ २६६ ॥ ॥ २६७ ॥ ॥ २६८ ॥ ॥ २६९ ॥ ॥ २७० ॥ ॥ २७१ ॥ ॥ २७२ ॥ ॥ २७३ ॥ ॥ २७४ ॥ ॥ २७५ ॥ ॥ २७६ ॥ ॥ २७७ ॥ ॥ २७८ ॥ ॥ २७९ ॥ ॥ २८० ॥ ॥ २८१ ॥ ॥ २८२ ॥ ॥ २८३ ॥ ॥ २८४ ॥ ॥ २८५ ॥ ॥ २८६ ॥ ॥ २८७ ॥ ॥ २८८ ॥ ॥ २८९ ॥ ॥ २९० ॥ ॥ २९१ ॥ ॥ २९२ ॥ ॥ २९३ ॥ ॥ २९४ ॥ ॥ २९५ ॥ ॥ २९६ ॥ ॥ २९७ ॥ ॥ २९८ ॥ ॥ २९९ ॥ ॥ ३०० ॥ ॥ ३०१ ॥ ॥ ३०२ ॥ ॥ ३०३ ॥ ॥ ३०४ ॥ ॥ ३०५ ॥ ॥ ३०६ ॥ ॥ ३०७ ॥ ॥ ३०८ ॥ ॥ ३०९ ॥ ॥ ३१० ॥ ॥ ३११ ॥ ॥ ३१२ ॥ ॥ ३१३ ॥ ॥ ३१४

स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः
 क. वृत्तनामदेन ॥ स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः स्वयंभुवः
 कविषयैः नाशं विनश्येता नाम ॥ नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती
 नां लावण्यवती, वनिकुशुमा लोका मासा ॥ नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती नववती
 नृकला नृकला नृकला नृकला नृकला नृकला नृकला नृकला नृकला नृकला

[illegible]

[illegible]

सुखं १

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

न ॥ पतसर्वं भूत्वा सनथकात्राभन्ना ॥ इह यस्याहं स रुडाहं रुवत्सला प्रियवादिना सा द्या ॥ निमनसि निभाय न रवदुःमीय ससहितमिदं
 कलान्तरयवान् ॥ अगा ॥ इह प्रीतिमि ॥ प्रत्येकपि कस दायास्यादि ॥ ॥ नता ॥ इह नन नमज ममावत सानेनार्थं पूज्य पुंकायिन ॥ ८७ ॥ का विममयश्च
 या गच्छतास्तु ॥ पतसर्वं भूत्वा यथा कुरु वामन सन्धाय ना मिनि ॥ यजुवा का विरुद्धा जाय ॥ व कन ना वद ॥ न नमयि गत्वा धनि कि ना रु कार्यम
 नु वि र्त् ॥ किन्तु ॥ यव स्वला व प्र ॥ ४ ॥ यत ॥ ४ ॥ ॥ नर्ग दद्यान्न विवद दिति सुकृ स्य सम्मर्त् ॥ विना रुकु न विदुः सुपु स्यान् र्वहस्य कर्त्ता ॥ ताजा ॥ अत्रः
 मने ना नी ना पालनं नः ॥ प्र हं नमन सन्धाय पत्नी ॥ यजुवा ॥ ४ ॥ यव विजानतु वीमि ॥ यत ॥ ४ ॥ वत्स का न यु नि धान न पु व कु वि दान न ॥ ४ ॥ अ ए र कि

मः मः कलाउल हिमकुथग ॥ नाशामन्नीचनगुक्ति ४ अन्यवायुगता ४ वज्रवाकोतुवीन । यवाहमर्वीजानामि । कस्यामृसात्रियाजिन ३ पु-
नमावकेनममनूक्ति ॥ ४ ॥ विद्यानामाकुल ३ शामान् वासनी ॥ निषागिता । विदुर्वाजीवनं मुख ४ सव्विद्वानयुन ३ ॥ नाशामन्नीचनगुक्ति ॥ सव-
५ कालेणमगुनीनूयलीय संपुनियतु कलेवांगकुहि । वक्रकाबादति । यवयुनिमिस्त्रावरुगुयात । ननरुमनूकानं वलावल ३ जानीम ४ । वक्रका ॥ ३ ॥
६ सवस्वयेननाकुलम् । कायकायविस्तारकन । वातगु कुम्भीरुगु यस्यानास्थान्मगु वय ४ ॥ सवविनीम विनीम । वागुगु हीवायात । ननासो सवर्गगु
७ यवाहिनीममगु कामं मुनिरुती । समुयपुलाययति । नथाकुकी ॥ नीथीगुमसूनस्त्रान्म ३ ॥ नयस्त्रिवा ३ नायत ३ ॥ वच ३ ४ ५

[illegible]

एवेव॥ किं स मे मन्त्रो वा, यश्चा मा वे वरु यति । युष्माश्चा ग्निस्वरुत्या ग्निर्दिनेत्य विवा त्रिर्त ॥ **अथ नय** ॥ विजुर्तुय य न ता त्रि, न युर्तु न क मा य न । अथि नि
 त्या विजयाम स्या ग्नुह ॥ अथ यश्चा मा न यो ॥ **यश्चा** ॥ सर्व उ व ज न ॥ अथो इ ना सा दि त स मि ड स ॥ अथ य न सा म थ ॥ स द र्थ ॥ का र्त्त व न हि ॥ **अथ** ॥ न त
 ॥ **आ** का य न य म वा, प्रा नि रि धो नू ण य थ । अथ या या मा म हा सि दि, नै त न्म नु रु ल म रु नू ॥ न थ वि वि ग्र ह म य स्ति न, वि ला क्क वा दं वु दि य गि ॥ **यश्चा** ॥
 ॥ म थ का र्त्त क ना य न्ना नू क ति ॥ रु ल व नी रु व नू । न ह त्री ति त्रि य म व, चि ना रु ल ति न क ण त ॥ **अथ नय** ॥ य म्मा इ न सी नू त्व, मा स न्न ॥ अ न मा गु हा ॥
 वि य रु हि म हा ला के, आ न मा म पि ग क ति ॥ **अथ नय** ॥ पु त्र रु ॥ सर्व सि दि ना, मू ला य ॥ पु त्र म ॥ **अथ** ॥ न ल म य म् रु ॥ दि रि न कि न रु रु न ॥

विष्णोऽथ तस्य । यवमहावलासो विष्णुवत्प्राजा । वलिना सह यादवः मित्रिना हि मिदधोत् । तान् यवः नृपानां यवयुद्धवत् ॥ अथ च ॥ स
मरुवः कुलमपुत्राय यो यकलत्रिचरितः । कलिचलवनासार्धं कीटयकलमायमः ॥ विष्णुः ॥ कोर्धः स कावमहाप्रहारात्रमपिमर्षयत् । उं कवास्व
नीतिरुत्तमिदं यवः सव्यवत् ॥ अथ च ॥ महत्प्रत्ययपायः ४, सममवत्तवत्तमः ४ । सन्मूलयिषु कान्, एतन्नीवनदीत्रयः ४ ॥ अतस्तु नृपानां य
वकाः ३१ ॥ अथ प्रियता । यावत् दुर्जसुः क्रियता । अतः ४ ॥ गता निधीयस्य ४ प्राकान् स्काभनूद्धनः ४ । गता गता सहस्राणि, तस्मात् दुर्ज विजिघ्रतः ॥
विष्णुः ॥ अथ च ॥ कस्मैतान् ४ पतिरुवाच । अदुर्गनाशुया प्राजा, यावत्तु मनुष्यावत् ॥ दुर्जक्यान् महावत्, मच्चप्राकावत् सर्वयुगी । सयुगा

[illegible]

न२

[illegible]

[illegible]

निरुक्ता संयथार्थं न गच्छति तन्मया विद्वत् । यथा मीमांसायादयामवर्णमागुविद्युत्तत्त्वा ४४ गलमन्त्राह । नाज्ञानमिर्ममन्त्रक । तथैव यम्य विद्येयं तन्मया कुरुत । गवु
थेवमनुष्ठय । यत्सर्वं सन्धुसिमय । तस्मान्निजमहा नावमकदा कविप्रधा । गतस्तेषां यमाकन । स्वराचारि नाप्रिगदष्टकत्वे ४॥ यन ३॥ यथैव सावधि
यस्य सा रुस्यासोदुनति कुम ४॥ अथ यदि किं यमनाज्ञा । तर्हि नाग्न्यपानहं ॥ तम ४॥ यदन्तरिक्षा यमस्योद्युग रुक्त ४॥ तथानुष्ठितं तदहं । तथैवोक्तं ॥ किं पुंम
मथैव संदीपय । सर्वं वलिनिजातिपू ४॥ यदुत्पन्नं जेत्येव शुक्लं वक्त्रमिदं तल ४॥ अनाहं बुद्धिं । आत्मयक्रयत्रिणागदित्यादि ॥ ॥ यदवकोद्विर्साय गत
युक्तं यथा । यथाह । मन्त्रं नृपुमकं । गथानुष्ठितं । नाज्ञाह । यद्यप्यर्थं तथैव दृष्टं तान्तावदयं दूनाया गतस्तेषां ग्रहविवाह ४॥ यथाह । वयुनिधि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमः १३ शुक्रायास्तु कथं स्थापयन्ती ॥ किंतु ॥ नन्दं ज्ञानं नन्दं शक्यं स्त्रीं दूतं प्रयागं न ४ । नकुत्रान्तरि नन्दं दूतं यत्पञ्चमी नन्दं मन्त्रिणं ४ ॥
नमः १४ सुखां कथं श्रुत्वा न ४ शुक्रं ४ काकीयि । शुक्रं ४ किञ्चिन्न नानि नानादत्ता सन्तु यद्विष्णु कृतं । राहिनं पञ्चमी नन्दं नाशायिना ज्ञानमन्त्रिणं वत्सं ४ समाज्ञाय यति
यदि ज्ञानं नानि प्रियावायुया ज्ञानमस्ति । नन्दं सुखं नमः श्रुत्वा स्मरन् वत्सं प्रणम्य । नायं नन्दं स्थापयन्ती विष्णुः । नाशायिना ज्ञानमन्त्रिणं वत्सं ४ काप्यस्माकं नास्ति । उक्तं
मम यत्पञ्चमी ४ शुक्रं ४ काकीयि । नन्दं सुखं नमः श्रुत्वा स्मरन् वत्सं प्रणम्य । नायं नन्दं स्थापयन्ती विष्णुः । नाशायिना ज्ञानमन्त्रिणं वत्सं ४ काप्यस्माकं नास्ति । उक्तं
नयनं नन्दं किञ्चिन्न नानि नानादत्ता सन्तु यद्विष्णु कृतं । राहिनं पञ्चमी नन्दं नाशायिना ज्ञानमन्त्रिणं वत्सं ४ समाज्ञाय यति
यदि ज्ञानं नानि प्रियावायुया ज्ञानमस्ति । नन्दं सुखं नमः श्रुत्वा स्मरन् वत्सं प्रणम्य । नायं नन्दं स्थापयन्ती विष्णुः । नाशायिना ज्ञानमन्त्रिणं वत्सं ४ काप्यस्माकं नास्ति । उक्तं

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यदा सूर्य उदयमासीत् तदा शक्र उवाच ॥ १ ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ २ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ३ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ४ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ५ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ६ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ७ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ८ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ ९ ॥ तदा शक्र उवाच ॥
 दशदिग्भिरुपस्थितः सूर्यः सूर्योदयः पश्यन्निवर्तमानः ॥ १० ॥ तदा शक्र उवाच ॥

२३

वृत्तियधः प्रतीतिवदयामि । नमो विवतनदुर्गम् यद्ययुहं हर्मनयः ननु न । यद्यन्यथा यद्यन्यथा यद्यन्यथा ॥ वृत्तियधः प्रतीतिवदयामि ॥
 नृपानि न ॥ म ॥ कलुषा मीव का यरि सुवयद्वली ॥ यावद्यथा वृत्तियधः प्रतीतिवदयामि ॥ नमो विवतनदुर्गम् यद्ययुहं हर्मनयः ननु न । यद्यन्यथा यद्यन्यथा यद्यन्यथा ॥
 प्रत्यक्षनायक मीयान् विवतनानां सयनं ॥ म ॥ कलुषा मीव का यरि सुवयद्वली ॥ यावद्यथा वृत्तियधः प्रतीतिवदयामि ॥ नमो विवतनदुर्गम् यद्ययुहं हर्मनयः ननु न । यद्यन्यथा यद्यन्यथा यद्यन्यथा ॥
 रि ॥ सव्यं वीर्यमिति रि ॥ हस्तिनागमनथाकं यद्यन्यथा वृत्तियधः प्रतीतिवदयामि ॥ नमो विवतनदुर्गम् यद्ययुहं हर्मनयः ननु न । यद्यन्यथा यद्यन्यथा यद्यन्यथा ॥
 ॥ सव्यं वीर्यमिति रि ॥ हस्तिनागमनथाकं यद्यन्यथा वृत्तियधः प्रतीतिवदयामि ॥ नमो विवतनदुर्गम् यद्ययुहं हर्मनयः ननु न । यद्यन्यथा यद्यन्यथा यद्यन्यथा ॥

३

ततः ॥ अथा विना कायं न जायते ॥ सूर्यस्य सूर्या नमः ॥ काहिया कुत्रेय ॥ ५४ ॥ यतः ॥ नतन स्य न नो दा स ॥ किं तु इव स्य रु यतः ॥ गौत्र वला य व वापि ॥ अनां अ न
निव अ न ॥ मूरु द न च मूरु व न न क्र मूरु य व स्य न ॥ रु लु ये न य य किं चि ॥ त्म ॥ ५५ ॥ रु स्य का न य न ॥ य दानां ॥ मही याल ॥ यू वां ॥ नी क स्य या ड य न ॥ इ य न ॥ अ वि
मा सी त ॥ ना कु य श स्या य या उ य न ॥ ५६ ॥ अ न न ॥ ५७ ॥ स म य ॥ ५८ ॥ द नू य नो द्वि ये क थ ॥ व क मु ल्मा व न वा य ॥ व सि व म्मा य ॥ ५९ ॥ रु ल ॥ दू य य द स्य स ग न ॥ य व अ न्ना य कः ॥ ६०
५१ ॥ सिं घ द्वि व न ग ग म ति ॥ ला का ना ल य रि र क ॥ ६२ ॥ व ल वू य मूर वा रु सि ॥ न न थान्ना म ही य न ॥ ६३ ॥ नि न ॥ न य य ॥ ६४ ॥ स ग ॥ ६५ ॥ रु य ॥ ६६ ॥ व ल मं य स्य से र्म
नी प्रा का ना ड ग मा य न ॥ ६७ ॥ स मा द ॥ ६८ ॥ वि का ना ड ॥ वि ज यी कृ त वि य रु ॥ ६९ ॥ त ॥ ७० ॥ य ॥ ७१ ॥ रु य ॥ ७२ ॥ वि य ॥ ७३ ॥ वि य ॥ ७४ ॥ वि य ॥ ७५ ॥ वि य ॥ ७६ ॥ वि य ॥ ७७ ॥ वि य ॥ ७८ ॥ वि य ॥ ७९ ॥ वि य ॥ ८० ॥ वि य ॥ ८१ ॥ वि य ॥ ८२ ॥ वि य ॥ ८३ ॥ वि य ॥ ८४ ॥ वि य ॥ ८५ ॥ वि य ॥ ८६ ॥ वि य ॥ ८७ ॥ वि य ॥ ८८ ॥ वि य ॥ ८९ ॥ वि य ॥ ९० ॥ वि य ॥ ९१ ॥ वि य ॥ ९२ ॥ वि य ॥ ९३ ॥ वि य ॥ ९४ ॥ वि य ॥ ९५ ॥ वि य ॥ ९६ ॥ वि य ॥ ९७ ॥ वि य ॥ ९८ ॥ वि य ॥ ९९ ॥ वि य ॥ १०० ॥ वि य ॥

[illegible]

[illegible]

यवतमा कथं ननु कस्यापि स्यात् ॥ अथ यव ॥ १० कस्यागमनात् ॥ विद्युत् ॥ ११ सन्दिना मन्त्रास्तु ॥ मन्त्रिवदन्ति ॥ ननु यव ॥ १२ ननु यव ॥ १३ ननु यव ॥ १४ ननु यव ॥ १५ ननु यव ॥ १६ ननु यव ॥ १७ ननु यव ॥ १८ ननु यव ॥ १९ ननु यव ॥ २० ननु यव ॥ २१ ननु यव ॥ २२ ननु यव ॥ २३ ननु यव ॥ २४ ननु यव ॥ २५ ननु यव ॥ २६ ननु यव ॥ २७ ननु यव ॥ २८ ननु यव ॥ २९ ननु यव ॥ ३० ननु यव ॥ ३१ ननु यव ॥ ३२ ननु यव ॥ ३३ ननु यव ॥ ३४ ननु यव ॥ ३५ ननु यव ॥ ३६ ननु यव ॥ ३७ ननु यव ॥ ३८ ननु यव ॥ ३९ ननु यव ॥ ४० ननु यव ॥ ४१ ननु यव ॥ ४२ ननु यव ॥ ४३ ननु यव ॥ ४४ ननु यव ॥ ४५ ननु यव ॥ ४६ ननु यव ॥ ४७ ननु यव ॥ ४८ ननु यव ॥ ४९ ननु यव ॥ ५० ननु यव ॥ ५१ ननु यव ॥ ५२ ननु यव ॥ ५३ ननु यव ॥ ५४ ननु यव ॥ ५५ ननु यव ॥ ५६ ननु यव ॥ ५७ ननु यव ॥ ५८ ननु यव ॥ ५९ ननु यव ॥ ६० ननु यव ॥ ६१ ननु यव ॥ ६२ ननु यव ॥ ६३ ननु यव ॥ ६४ ननु यव ॥ ६५ ननु यव ॥ ६६ ननु यव ॥ ६७ ननु यव ॥ ६८ ननु यव ॥ ६९ ननु यव ॥ ७० ननु यव ॥ ७१ ननु यव ॥ ७२ ननु यव ॥ ७३ ननु यव ॥ ७४ ननु यव ॥ ७५ ननु यव ॥ ७६ ननु यव ॥ ७७ ननु यव ॥ ७८ ननु यव ॥ ७९ ननु यव ॥ ८० ननु यव ॥ ८१ ननु यव ॥ ८२ ननु यव ॥ ८३ ननु यव ॥ ८४ ननु यव ॥ ८५ ननु यव ॥ ८६ ननु यव ॥ ८७ ननु यव ॥ ८८ ननु यव ॥ ८९ ननु यव ॥ ९० ननु यव ॥ ९१ ननु यव ॥ ९२ ननु यव ॥ ९३ ननु यव ॥ ९४ ननु यव ॥ ९५ ननु यव ॥ ९६ ननु यव ॥ ९७ ननु यव ॥ ९८ ननु यव ॥ ९९ ननु यव ॥ १०० ननु यव ॥

[illegible]

तपि वनवनायथ रूपय निववन्तु ॥ कावलिमनाहविनिर्ग ॥ नममृचिर्ग ॥ शुभमवकाकी नाना सुखममान्तिरुय नमसिधुविनसुदह मायिगला नि
दुपयामिकिमगदिनि ॥ गगनावाडा ॥ १ ॥ नममादाय नाना सुखममान्तिरुय नमसिधुविनसुदह मायिगला नि
सुखलिखा नरुविगा इवला किता हृदय हृदय वाच ॥ कावलिमनाहविनिर्ग ॥ नममृचिर्ग ॥ शुभमवकाकी नाना सुखममान्तिरुय नमसिधुविनसुदह मायिगला नि
यामामरुगा सुखेन विग्नाना नू दाना इमिष्यामि ॥ वीवव वाकु ॥ कथं स्यात् न विहावलम्वनं सगव ॥ ४ ॥ लेखनं वाच ॥ मदितुमाः
हाना ॥ १ ॥ नममादाय नाना सुखममान्तिरुय नमसिधुविनसुदह मायिगला नि
हाना ॥ १ ॥ नममादाय नाना सुखममान्तिरुय नमसिधुविनसुदह मायिगला नि

स्वगुरुं गत्वा निद्रां कृत्वा ४४ वृत्तिं तापं यश्च मां कां द
 कलपिषु स विरतं यं निद्रां पं त्रित्यं आत्मा याप विष्णो
 सानन्द ४४ विष्णो ४४ ॥ अथाहमवर्तु न ४४ स्वामीनां नमो यं पश्चा यथा ग ४४ मशस्मानका ४४ नादित्यं सूर्य ४४ य ४४ ॥ तानादिना वदव विष्णु व
 कर्म ४४ न स्यदह स्य विनियोग ४४ ॥ य ४४ ॥ अना निद्रा विमं यव पना ४४ ना ४४ ॥ मनिमि विष्णु ४४ विना ४४ निद्रां यं त
 सति ॥ ४४ विष्णु ना ना जय यं त नमो ४४ ॥ नाना नकम्य ४४ मुख मका वरु न स ४४ ॥ ४४ गाला ४४ ॥ ४४ सर्व म ४४ ता य त न

गा॥ नांशायिनदनुसबन्गान ॥ ननु संप्रवृत्तवत् कुरु ॥ अहं ननु किं यत्नं यत्नं तर्हि गच्छामि ॥ माता कि
मिदं मनुष्यावयवमहाबाहूय, कासिथिलयसि। तावन्नव ४ पूरुषाश्च २५५ लिखन् ॥ पूरुष ॥ इति मे कार्यं समुद्दिष्टं कर्तव्यं यत्नं तर्हि मया। क
म्यगायत्री ॥ म. कर्मायमं शक्तिमया ॥ अविद्युत्सीद विद्ययन्ती ॥ पूरुषोऽयं काम हा नाश ॥ गच्छ नाम मय मय हा बलं यत्नं पूरुषाणि नाश ॥ ग
ताविन्नवव शिक्तयामास ॥ गच्छ हा नाश वलं न स तावन्निस्तव ४ कुरु ४। अ. ५ नाति ४ पूरुषाश्च जीवन् विद्युत् न मितासा ॥ विद्युत् न मितासा ॥ विद्युत् न मितासा ॥
रुहो ह दम मय ॥ विद्युत् ४ सपय विद्युत् ४। रुहो ४ सपय विद्युत् ४। कथं पुण्या मिदं काजी राह का मि ॥ नाह ॥ विद्युत् न मितासा ॥ विद्युत् न मितासा ॥

॥ नमः ॥ किं वापि स्वामिनः ॥ यत्तु स्य ॥ कां ह्येतदनु किं न । स्वामिना ह्युक्तान् ॥ तदुक्तमाह ॥ मातृन्मस्य वक्तुं नमः ॥ पुत्र ॥ कां ह्येतदनु ॥
 तत्तु यं स्वामिनः पुत्रं ॥ समेतजन्म निजन्म ॥ नि ॥ वृत्तिनिवृत्ति कथं ॥ ७ नमः ॥ पुत्र ॥ तदुक्तमाह ॥ मातृन्मस्य वक्तुं नमः ॥ पुत्र ॥ कां ह्येतदनु ॥
 ॥ कृदुक्तान्व ॥ अन्नं न सह ॥ लोके ॥ नरुक्तान्व ॥ तदुक्तमाह ॥ मातृन्मस्य वक्तुं नमः ॥ पुत्र ॥ कां ह्येतदनु ॥
 ॥ यिरवन् ॥ अथ रुग्णवत्ता सर्वमंगलया ॥ तदुक्तमाह ॥ मातृन्मस्य वक्तुं नमः ॥ पुत्र ॥ कां ह्येतदनु ॥
 ॥ तदुक्तमाह ॥ तदुक्तमाह ॥ मातृन्मस्य वक्तुं नमः ॥ पुत्र ॥ कां ह्येतदनु ॥

७२

हृदयनयथायाफाहनिगकामि। रगवसूवाव। अनननीसहाकथरुहावातुल्यनत। सवधसुखकामि। गजकविजयारव। अयमयिस
यत्रिवावा वागयूणीजीवकु। गहावीनवन४सयुक्तमान४स्वगुरुन४मातायिनीनलक्रि४यासादगसुहावागधिवसुहाकि४अथवीन
ववादानसु४यूनरुयालनयक४सुहावा। यवसावदतीहीमाताकादध्यासुत्ररू। नकायन्यावालोविश्वरू। गधवनसुलंकाविश्वरू
वागाइविकयतू। कथमयि॥ अयनामहासुव४यन४॥ युर्यकुमादकयन४गुनस्यादविकलेन४मासानावागुन४मासानावागुन४मासानावागुन४
युनिकुन४॥ अयनामहासुव४यन४॥ युर्यकुमादकयन४गुनस्यादविकलेन४मासानावागुन४मासानावागुन४मासानावागुन४

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वायुः ४। नथानुसुमविगुविगुदन्तसुमेनिकावदुवः ४। सात्विकाः ४। सनायगश्च निरुनाः ४। गनः ४। शिबुवः ४। विमधुः ४। स्वमन्त्रिणी दीर्घमार्जिनमारुनागकिमित्यमादुपे
काक्रियर्गः। किंकायाविनयाप्रमासि॥ ४॥ नथानुसुमविगुविगुदन्तसुमेनिकावदुवः ४। सात्विकाः ४। सनायगश्च निरुनाः ४। गनः ४। शिबुवः ४। विमधुः ४। स्वमन्त्रिणी दीर्घमार्जिनमारुनागकिमित्यमादुपे
गदुनि पथाः ४। कल्पनीसुखमैवागा। उद्युक्तविद्यान्तः ४। प्रमार्थयज्ञांसिच विनीतः ४॥ ४॥ (अवदनिदिद॥ अविद्वानेपिरुपात्ता विद्यादुद्रापशर्वमा। पर्वकायाम
वापानि कलासन्नगदुर्यथा॥ नृनाद्य॥ धनं मुग्गयायुग मर्थद्वयमैवव। वाग्दुयुयश्च पाद्वी यसनानिमलीकृता॥ किञ्च॥ न सासरे कानकसुनूवृत्तिना न
वायुः ४। नथानुसुमविगुविगुदन्तसुमेनिकावदुवः ४। सात्विकाः ४। सनायगश्च निरुनाः ४। गनः ४। शिबुवः ४। विमधुः ४। स्वमन्त्रिणी दीर्घमार्जिनमारुनागकिमित्यमादुपे

[illegible]

[illegible]

वादिनामथार्थप्रसादनमानशु॥ यथा॥ यः काकिनामर्थयथययनामन्विष्यततिष्ठसहस्रकुलम्। स्वानवकाटिष्वदिभूकेहस्तुर्लोकसि
 र्हेनद्रुतिलक्ष्मीः॥ कृतीविवाहवाहनत्रिभूकम् यस्तस्मिन्कर्मलिमिगुर्गम्। धिमासुनात्रीष्वधनयुवभूषकनिबन्धनास्तिनवाधिः
 याकसु॥ यनः॥ मूर्खः स्वल्पवयसात् सर्वनाम् कवागिहि। कः सुधीस्तुल्यज्ञः शृङ्गस्यैवाति साधसात्॥ वाताहः॥ कथमिहसमयनिबन्धनम्
 यनः॥ तथार्थः॥ आयमर्थधनवक्तुः॥ मन्त्रिभूतः॥ श्रीमन् ४ कथमायमः॥ वाताहः॥ कदाविमदित्यतः॥ सुविनाः॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्था, रयमिनिप्रकृतिजान्यन ४ युयाह ॥ अथ मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ किमिति सूक्ष्ममलिर्नयन ४ क्रियते ॥ अथ ३ ॥ रावस्मिन्मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ विविधमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४
गायतयुग्मयागेन यमाधेरीविनवाय ४ ॥ त्वष्टादव, स्वामि सर्वदा वक्रणीय ४ ॥ यत ४ ॥ स्वाम्यमायश्च माङ्ग्य, दूष्मन्मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४
४ यो मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४
अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४
अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४
अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४ अथ यिष्टमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ४

[illegible]

कविष्ठवन् यदिति नो कदापि हृदयं महीरुर्वा । नीतिमनु यवने ४ समाहृता ४ सर्वं प्रयत्नैः कृत्वा ॥ अत्रिगणनं न विदुः ॥
नामसु मीयः ४ वृत्तः ४ ॥ ॥ अत्रिगणनं न विदुः ॥ विग्रहस्तव कथित ४ सन्निवधूना शिवायना । यस्यायमाय ४ ॥ अत्रिगणनं न विदुः ॥
प्रिगामे वाक्कादिह वसनया ४ स्त्रिया र्थां ग ४ अत्रिगणनं न विदुः ॥ नात्र नृणां ४ ॥ कथमनन्त । विदुः गणनं न विदुः । तत्तत्कृतं वाक्का
हंसनाकं । कनाय मसुधुर्न निश्रिया ४ ॥ किम्या न कनवा ४ समुर्न निवासिना कन विदिय प्रयुक्तं न । नृणां नृणां ४ ॥ अत्रिगणनं न विदुः ॥
॥ अत्रिगणनं न विदुः ॥ अत्रिगणनं न विदुः । नाशाकली विविद्याह । अत्रिगणनं न विदुः । मनसुदेव मननं । नृणां नृणां ४ ॥

[illegible]

五班

८२

मागर्गहस्त माहानवशाडा जेव कयीविस्थीडाह लि(प) धनतवखडाडा यतनाकन
इयहासयाग धतिनश्यावृद्धिदतं डायावसदयीडाधमय ॥ ॥ कुलीसतरु
मत्स्यामिहासिलेगन ॥ मत्स्यामांशयविश्रु किंनयधमसिजेवक ॥ ॥ ला
ना कलखसडात सामइ हात्ताक ग(ध)मशाया जेवकधक । मिशानयदया
धयाधयाकान गवृद्धिनेदधया धनाध वनिसाया धयाधवा नधनवनीनाम
कनी धयनी श्रीगवृद्धि नयन सुखनकासहृद गवृद्धिनेकासश धयाध

नीरुगाडा भववनिमान लारलरं कान लिथ धमिमान थडायुनख लानकडा
मतिरु कनीयह धमिशातिय के भवदधं हगड मायी न यु (थडाडा जायाडा वि
न थ (थ आन धनिमस केलवस्यं चाह धवलन धमहायुनखन तिननयाव
न य धनमहाडा युनखगिठमातिठ धनसाह माधव सर्वसे जाहोडाडाव जि
न धन जिहूत कया न च्छुआय खित दं वधक धतिन धमिशाजननमन
धमिमान जाह डा यावतु दक कायाव डानधक राजयाव धायाध कायाडा

हा रुगतयकात धवनस धनसि कवननवान धमिमान सासनास्य वनसमद
 नजाहडाया वसुमद आउ धमयनस स्याहात ता (ध धूना धनडा यायेह मशिस
 यात रुनहास्य कुमुलि नदीतिसस (धहात धयात लिपत्रयात ०० धवन न डंवक
 वन डायाडा जायासकु यास जाहडायात लायाससूसीर मयात खुसीनवाह
 मडा नासन धवनस नायात ०० मान यनहा माहाडालेख हाडान ॥ धशायाडा ध
 वन (००) के यउयस ॥ कुलिन हतमा स माया (००) क ॥ ध मायाडा डंवकन धान ॥ रु

मम नीउस कलसील तित जि न । किं मा तदसि दुर्वद आत्मानं किं तय भ्रमि । भवयुन
मात्त रानय हशना कुन जीत हा न थमथ (थमास) या भक्त जेव कर भवन धरु हा डा ध मि
भया डा रि कु भीश या वरुल धतिन थमदा ह म स्व सी मत्र निद्या या यम न डा ॥ ॥ भवन ले
मलेन नाथ मि हा म या कु ना ॥ अरु न ध इ ना च नी युन भवन र विष्म ति ॥ ॥ खिवा न च ता
न च लान नाथ या हा नाथ न सि रु या हा नी ल इ ना चो नि म् ॥ अखि स्य यद या (सं क) ॥ भगा
मात्तान ग्वहि न जया थम शम स मरु त या अखि स्य खिवा या मा म न ल हि सी गन धवन

~~711-470 119 21-11-52~~

[illegible]

॥ ननु कुरु कुरु कुरु जमि सो थव वा कुरु सिधु मसिधु स्वयाव जवुक कुरु या हा धलरुया
य वने विवले रुना धनरु जवुक वयाव थम वलीत रुवण दिन यति यव मध्वनरा ता
॥ १ ॥ ता स यामस न्याल वने थम सयन मध्वनरा शायम कुरु या धजवुक या हा माव क
तल सविने रुना ॥ धतिन ये निरुन ले श्रीलाग हाव इनात्मान विद्याला हाव सून लाराव म
कुरु म ॥ ॥ मुखाना नायाद कुरु हि नंद यदि वा हि न ॥ हिता वद मकाशीत यिद्याली
॥ मुखे जाति हि न कडा रुन सन्ने उय धम विरय म कडा ॥ मुखे तानन जा

उत्पद्यते विना सन पिबे जगत् साकदडा । ध्याडयाख्यान म्वच्छिने धायस रुगुलितवनस
सामगवन हिनकेयवत साधनये साधनन आठआठ लिथ धवनया वाननचुझत
गंगाछाव वारुसन दायके खान भीतन केयवये आठ धखडाव पिबे जगत्सन द
वास्त कनाचायाव धवानस वाने दायके आठ खडाव धान रावानन ॥ हस्तवानया
नवेव वसवान सिवानन ॥ भीतवातयनिगधं नृहि किं कनि सति ॥ चुस्केनसे लाहा
वस साकमि पयिहङ्गे चु भीतवायनयात रुदये के सतवसा धकहन धडडाव वा

या जा धन पाव वादि यउन् सिमा गयाव वडाव कुन जी द्वा खान या धर्क समन यि ४४
न माद दिन ॥ धति न मुख्यात डय दध विसे मन व धर्क ॥ ॥ मुख्य मधु ल मधु मधु मुख्य
ति मायक ४। तथे व नि धन जा नि चन्द दृष्टे व वानन ४॥ ॥ मुख्य क नाय कश्च वडाव डवि
मया कडा खडाव वानन न धान ॥ धया डया खान धति न व नां न स वानन व स
नडा च दू या कन स नाणी वन स सिमा नका ४४ वन स धवन स वाड डधिस चन्द
या ध वानन य नि स्ये खन धूमी सन रान यन ध धि उ न कया दि ये त्व डधिस य दन य

ॐ धरे धकायडयाय याय गुन धर्कं हता सचायाव लि (ध) रुद्रनभान विधात हि
विधागन कनकं काय धकाय धर्कं धददाव रुद्रनभान अम (ध) मजित धर्कं रुद्र
नने कनातन कनकं धकायभान धददाव वाननया यवमान रुद्रनभान अम (ध) म
धर्कं कसथखेनया तयानमद आडा कीजी सकनसं (ध) (ध) कीयातजादाव मालरुका
तासडान धर्कं धददाव सकनस्यन अम (ध) जीवधर्कं धाया धं ध (ध) क्रियातजादाव स
क्रानडडाठ सकनभाक ॥ धतिन मूर्खनायक रुद्रदाव भाक धर्कं ॥ ॥ हिननवार्क ॥

नवाकै हिताहि तंदूर्यनवाकै। कनूधुका नाम कनीमनाजा हितायदहीविवनयविष्ट
॥ अहिताख क्तायमनडा। हिताक्तायमनडा। हिताख क्तानासने कनूधुदहाया कनीगना
वेवनस थडाकडा॥ धयाडयाखान कनूधुदहाया कलिगधननाजा च्छुदया कनस अ
विशक ससनकयकयन भवदहाधनकथह धदहास मरुडल्यात शव खडावना
धनानियायमानधान नाजास्यसाकमूनकावरात धडल्यातस दारिहात नदहासा क
धल्यातविवनस थडन थधनभानिहयीवधकधान हिताडयदहावियाव सिथला

मान भवत्सु क्षाणि भगवन् कनलायुव धत्ता जाह्नवस्तु भवत्सु दयितव्यकक्षान धन्व
विवलस्य पूरुन भावकेशना ॥ धत्तिन हिनश्चरसा अतिमश्चरसा धाययुव मव्यस्त
न विरयसेनव ॥ ॥ यिष्टुन केवय क्रियात् कर्मचाह्ना तमा त्माना विनायकस्य स
मतिआनिना एव ॥ ॥ भवसा क्खनयुतिक शयमभव थडा कर्ममस्वस्य भवसा
न विनायक भावकेन भासन वानिकद विदेशव ॥ ध्याडया कान ग्वष्टिन धारा या
वाप्तमस्य अकसिन विनायक यतिमाश्रयाव दिनयतिं पूजायास्यं गंवश्च नाथं

तामिरा ताकारं रुसमवियाव रुद्रया रुद्राय नृगलभायाव याजाहाव ध्रुवाक्ष
रातिनायक भेसादेता यजायाहा थथर्न जिगरुसमविव जिन ध्याननवन
भक्त भयाव धननि विनायकस्य जिकेताकारयुजायाकधक रात्रयाव ययकन
हसन दिनयति सेतु २ माहान विवत्तेशवा एसिचिर्नति ध्रुवाक्षनत्तधनिश
याव तन्नाथधामा वागिकनधान थथिददनिद्वान्नगडामिशना रुद्रयाथनध
नक्षीरुग थसवानिक पनिर्त्य विनायक यानवननडा कद्रुनिसशकया विस्फागसा

लिह नव/८ नर/८ न/८ न/८

म मधुसूदनस्य गवच्छिन्नं आयस वनस सिंरुनग्राह्यमालश्व वनस गगनस्य
वनस गगनसिंरुयदाव धान आव जिन्नायमदकाधकं इन्द्रसिंरुन उमाचन्त्रि
य यागनि इयायनियायधकं सिंरुनरात्रयाव धनसि सिंरुनयावधन राष्ट्रि
सिंरुनयावधन उक्तम सिंरुनयावधकं मन्त्रगानमधकं अथडावाजासिंरुयाक गीवा
अथ मन्त्रमसीरुनधान अमाधयसिंरुनयावधकं अथडावाजाधन धरथं धकासीवात गान
सिंरुनयावधनयाव सिंरुनधान अमाधसिंरुनयावधकं धान गगनसिंरुनयाव

ने. २५५

म भानमइधिसि लाहयत वकाध्वनकल लिथधसिंहन रानयाव भवसिंहयका थमय
ननवंगदधक रानयाव गुणहयाच्छयंकन रुतकन धननस थमसहाथ कयाभन
लाहाभंयाग निथभसिंहयाकाधवयाव दुधिसद्वाम थरावयमरुयाव धसिंहस
भ भानिन ग्यनयावदिदत धनवलवतभय ॥ मृतयध्वयवतस्य यच्छस्यामिवात्म
ननवंगकृतापीतिव नष्टवयिकदाचन ॥ ॥ द्विकायसिकसाइन द्विथान भाकशाव
सिंहइहनदव पीतिगुवमइवधाय नागनयदयाक्षक ॥ ॥ ध्याडयादान ग्यच्छिन

ग्याभाशुशकारव लाकवमउव राजदवाप्तधत्वं दंशतमभवदाव वदयलयाव दिनयति
रुनी धधयस नागयाआधय नागनगायाव आनंदशव सध्वयनडायाव दिनयति
धधयकं धवाप्तधयागविडात्वंशना धलूनधान धवाप्तनधनिश्वधकं रुद्रयादधश
नरुधन धडामनादाव भवच्छान धनागन लख्ठ धधयकं विन धकायाव वाप्तधन राव
दिनयतिरुयावच्छय रुद्रन गक धनागयाप्तदयस्यादावधनधकं धिननयाव य
मदयाववाहत्वंशना धवलस नागनयूनवाल लख्ठ विनयादवव वलदास्य धयलि

निरुद्धास्तु धनान् नागयाभादस्तु च यिनयान् उरुगनययान् क्रियान् (धरावच्छकशम्) ॥
निरुद्धास्तु धनान् यायनच्छकनमस्तु स्यात् लि (थ निरुद्धायाया (थं कायमवयाव ववून
निरुद्धास्तु कायनागनदधनयाव चान कायसिकखडाव नागयातन्त्रान् लि (थनागनध्मा
निरुद्धास्तु कायन ऊक्रियातस्तु च यीनयावाव ऊक्रियातमाकशादूनधकनागनध्माव थ (थानच्छ
तस्तु यायकदतया लि (थ धवास्तु धन धवकायया अयवाधरानयाव रानागनाजा च्छिद
नमस्तु जिक्काययादायन ध अयवाधन मृत्पूजन धतिन च्छि जी आवनद्वयाथं अयायन जी

तथयागतवयं चिन्न लयं ह धन्यकं विद्वन्धकं लिख्य नागया आधयस वाङ्मनवध मृतयस्य
तथा आकयदयैराह चक कश्चा धतिन चक्षामरिह रुवडास्यं स्तदुयीति इधायमदू ॥ २ ॥
रुः खनकरुवा नक धि चाययञ्जत । घटस्य यथा गन वाङ्मनवध मृतयस्य ॥ ३ ॥
नवसा निदानयाह कथमात्र यथा जनदवख धनयाह विद्वथहन तव चक्षुधिन धवय
॥ ४ ॥ धव आयतयाहादव ॥ ॥ धयाउया द्वाहाग धव धनसा घटि नंदहास धनाध
॥ ५ ॥ धयाग्नी धाकन लवतिनिव लिधक ध धाक धयीयस्यं तव लवतीनीध क उमल

तस्यैव धवन्तस लिथ धाककन अन्तनययात भवयाकयास रुठन अलाकायात न
अह धवन्तस लिठ्ठुणीन लिठ्ठा रुठवव धवन्तुणीन लिठ्ठा विरय मरुयाव धवन्तुभाख
लिख्येकाक धवन्तुठाव लिठ्ठुणीनधाव धवन्तु चवन्तु क निदानननगयाइवाधकंधाव ध
इयादध विरय गाथल धनलि धन लिख्ठु आदिन च्छुश्वसां निदानननगल धवन्तुणीनल
नाननन धवन्तु विइथठ्ठु धवन्तु लिठ्ठुणीयावन्तननमन धधवयास कायावन्त
यास विरयगन वियीरुडायमरुयकन रुठयाडा धूकनिहा शाकथठाडागल लिथ

वास्तव्यमन्यदण्डान धनलि लिथ लवतिनिन थामकम्भन अतिनिदानयाकसीयात्र वयाक्
शायनिनिनिनिन लवतिनिन चि जि थाम अन्धानन कुरुमशायधकं च्छी थामकम्भ जिक्
मोदुनधामन लिथ थामकम्भया कुरुमस लवतिनिनशान कायननयूशतया धनयाखर्द
यिनचु वरुक्धकं कोरुक्वायात्र थामकम्भगगदावचन मछस्यं लवतीनिन काथानका
ममनयाश वाजातसान विनछाछाव लवतीनिनीत लिथधवागवाध्मधधगायात्र रुगा
चुलिहा विद्यान सधसिस्कावयाछाव थस वाध्मधन धाम रुचुवध्मणी चुनजिको ना

धनान्यादाने मन्नाडाना धकधमन डायानरुनागुलिच्छुयाय आवननीयं कूडम समकं
ननीयानयाव धकं वाप्राधन नडाकाग लिथ धयनि सेखनकावहन धतिन कुवतु
हस्तं धीयेयाहमयमान वलसंकुवस्तुनिदानमान ॥ ॥ वरुहिनविवाद्य ॥ ॥ दूर्वले
वनीयसा । यथा सध्वतज (ध्रुव सनरुस्तुनियतिग ॥ ॥ अदिक कनकडा विवाधमन
कवनरुनमान चिकुधममहवाहनासां ल्याखमयायमगडा ॥ धयाडयादाने कल्यकक
मास कस्तुसध्वन कानवूसमाचकादव सादुन ॥ ग्वच्छिनेवयस कल्यवृक्षसीमाइ धक

६ न/५/५०५

२०५१११

कल्याणतलम कसूसस्येच्छम वसतववाच धकल्यवृद्धन कलवृस अदि कडाडाखडाव कल्या
न कसूसस्येच्छाङ्गनाभान आवजीम्यायममात्राधक धतिदडाव कसूसस्येच्छनगायाव क
ल्या नरुखवदनं ग्यायत्राधकभान धकववृसयंकं जिनमात्रकमखा धयाव अहंकावसा
व कसूसस्येच्छन कल्यावृद्ध हिउदीडाव शानाजायाव अभांखान काववृसस्यान थथशुडा
न मारावृणन कसूसस्येच्छरुवृडाव कसूसस्येच्छाक लिथ कल्यावृद्धया रुन कल्या दलीवृ
मनमद कल्यावृद्धमात्रक धतिन अदि कव तीनाधमनडा ॥ ॥ यच्छन्न४कीलराकवा ॥

॥ १ ॥ विष्णुसहस्रनाम ॥ १ ॥ वासुदेवाय नमः ॥ १ ॥

॥ नमस्तुभ्यै नमस्तुभ्यै ॥

॥ २ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥

॥ ध्यात्वा देवांस्तुभ्यै ॥

॥ ३ ॥ साक्षिभ्यो नमः ॥ ३ ॥ ध्यात्वा देवांस्तुभ्यै ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ रुद्राय नमः ॥ ४ ॥ ध्यात्वा देवांस्तुभ्यै ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ वज्राय नमः ॥ ५ ॥ ध्यात्वा देवांस्तुभ्यै ॥ ५ ॥
॥ ६ ॥ नमस्तुभ्यै नमस्तुभ्यै ॥ ६ ॥ ध्यात्वा देवांस्तुभ्यै ॥ ६ ॥

[illegible]

श्रीशशाङ्क भववनिधान सायलसंक्रान्तिस्थ धर्मिष्ठान थडायूत्रख'स्त्रावकडा
पतिशकन्ययह धर्मिष्ठानियक भवदश सगह गायी न गु(थडाडा जायाडा वि
न थ(थआन धर्मिष्ठान केलवस्यंवाह धवेलन धमहायूत्रखह चित्तनयाव
धन यधममहायूत्रखपिठमातिह धनस्याहताधव सर्वसेजाडाडाडाव जि
धन जिहूतकयात द्वायखितदवधक धर्मिष्ठान धर्मिष्ठाननयनमन
धर्मिष्ठानजाह डायावतुदक कायाव डानधर्महाययाव धायाध कायाडा

मागर्गहान माहानव्याडा जेव कयीविश्यंडाह लि(ध) धववखडाडा यवलाकन
इयडासयाग धतिनस्यावृद्धिदतंडायावसदयीडाधाय ॥ ॥ कुलीसतरु
मस्यायिगालिसंगत ॥ मस्यामासयविश्व किंतयधसिजेवक ॥ ॥ ला०
आ हासखसडात सामइ हात्ताक ग(ध)मशाया जेवकधक । मिशानयदया
धयाधयाकान ग्वच्छिनेदधया धनाध वनियाया धयाधवा नअनवनीनाम
दनी धयनी श्रीयूवम अयायन सखनकासरुह ग्वच्छिनेकालस धयाश्री

२५५

॥ अस्तु नित्याय स नमः ॥

॥ अस्ति त्रयोकाया यनाय ॥

॥ अयत्रीक्षि तक्षीलानां यश्चक्रातिथिलियरु ॥ तण

॥ अयाडयाकान ॥ अचिन्त खसीस हंसवसनय

अकधरा धृत्वा खसीनचस्यंरुव खदाव हंसन कर्नाचास्यं डयायन थकास्यंनसधक

अवा वनसचनयाह इव धृत्वायामनसरात्रय म्वर्णहंसयात्रानयमनडा धकं नद

॥ अमलखनयं तवक्ष्ण हंस मायकनधकं । धतिन धमस्वराव मसीयाम्भव विष्मस

॥ अयं ॥ समुत्पन्नैयकार्यम् यस्याचिरुंषादीयत । नदीतत्रतिदग्ग्या जनमधुउता

पु. १६९६ वि. १३० ८४३